ISSN : 3048-6203 Volume -3| Issue -1| Jan - June 2026

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 25-31

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विजय सिंह
शोध छात्र, शिक्षा विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
डॉ. सुरेश कुमार
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेल : sureshkumar11275@gmail.com

शोध सार

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने शिक्षा के द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास पर बल दिया है, शिक्षा की पाठयचर्या में राष्ट्रीय भाषाओं, संस्कृतियों और ज्ञान–विज्ञान को स्थान दिया, शिक्षण की प्राचीन विधियों को नये शिक्षण सिद्धांतो के प्रयोग द्वारा उपयोगी बनाया, शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को ब्रह्मचर्य पालन का उपदेश दिया। बच्चों के साथ प्रेम एवं सहानुभूति पूर्ण व्यवहार और विद्यालयो को समाजसेवा एवं ग्रामोद्धार का केन्द्र बनाया। इसके साथ–साथ इन्होंने जनशिक्षा, स्त्रीशिक्षा मानवतावादी शिक्षा का स्वरूप प्रदान किया और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा का श्री गणेश किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का प्रभाव आज भारतीय शिक्षा में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

मूल शब्द : रवीन्द्रनाथ टैगोर का परिचय, अध्ययन का उद्देश्य, अध्ययन विधि, रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन, शिक्षा का सम्प्रत्यय, शैक्षिक दर्शन की वर्तमान में उपयोगिता।

प्रस्तावना :

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के जीवन को सुखमय बनाने का प्रमुख व सर्वोत्तम साधन है। शिक्षा मानव को मानवता की ओर ले जाने का कार्य करती है। भारत वर्ष में अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया है और इन महापुरूषों ने अपने दार्शनिक एवं सामाजिक विचारों से समाज का पुनर्निर्माण कर उसे नई दिशा प्रदान की है। यह पूर्णतः दृष्टिगत है कि यह योगदान अत्यंत

महत्वपूर्ण तथा आवश्यक है क्योंकि कलांतर में जो विकास होता आया है वह पथ हमारे इन्हीं महापुरूषों की देन है। भारतवर्ष की पवित्र धरा पर 6 मई 1861 ई0 को गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी का अवतरण हुआ। जो महान दार्शनिक, प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा समाज सुधारक थे। इनके शैक्षिक विचारों का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर के अपने अनुभव थे। इन्हें अपने बचपन में अपनी घरेलू शिक्षा के बंधन और अपने समय की स्कूली शिक्षा की बुराइयों को सहन करना पड़ा था। आगे चलकर यह अनुभव ही इनके शिक्षा दर्शन के आधार बने।

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी शिक्षा को मनुष्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मानते थे। इनकी दृष्टि से शिक्षा वह है जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है और आध्यात्मिक पूर्णतः की प्राप्ति करता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर जीवन का वृत :

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म कलकत्ता में 6 मई 1861 ई0 को हुआ था। इनके पिता देवेन्द्रनाथ एवं माता शारदा देवी थी। इनकी शिक्षा का आरंभ इनके अपने घर पर ही हुआ। इसके पश्चात् उन्हें 'ओरिएंटल सेमेनरी स्कूल' में भर्ती करा दिया गया है।

12 वर्ष की आयु में इनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। अध्ययन के साथ–साथ यह सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक कार्यो में भी भाग लेते रहे। 1878 में यह इंग्लैण्ड गये और 1881 तक वहाँ रहे। रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। इनकी सबसे अधिक ख्याति साहित्य के क्षेत्र में है। इनकी शिक्षा से सम्बन्धित रचनाओं में 'शिक्षार हेरफेर' 1892, हिंदु विश्वविद्यालय (1911), धर्म शिक्षा (1912), शिक्षा विधि (1912), स्त्री शिक्षा (1915), विश्वभारती (1919), श्री निकेतन (1927), आइडियल्स ऑफ एजुकेशन (1929), शिक्षा सार कथा (1930), माई एजुकेशनल मिशन (1931), टू दी स्टूडेण्टस (1935), शिक्षा और संस्कृति (1935), गुरूकुल कांगड़ी (1941) है। 1910 में इनका विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ 'गीतांजलि' प्रकाशित हुआ।

'गीतांजलि' दिव्य भावनाओं से पूर्ण गीतों का संग्रह है। इसके प्रतीक गीत में अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। यह टैगोर की महानतम कृति है। इसने इन्हें कवि से विश्व कवि बना दिया।

1913 में इन्हें इस 'गीतांजलि' काव्यग्रंथ पर 'नोबेल पुरस्कार' मिला। 7 अगस्त 1941 को गुरूदेव ने अपनी ऐहिक लीला समस्त कर महाप्रस्थान किया। यूँ गुरूदेव अब हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनके दो कीर्ति स्तम्भ आज भी हमारे बीच है –साहित्य के क्षेत्र में 'गीतांजलि' और शिक्षा के क्षेत्र में 'विश्वभारती'।

शोध अध्ययन की आवश्यकता :

प्रत्येक व्यक्ति शिशु के रूप में इस संसार में जब जन्म लेता है तो उसमें पाशविक प्रवृतियाँ पायी जाती हैं, किंतु शिक्षा ही ऐसा साधन है, जिससे पाशविक प्रवृतियों का दमन होता है

और व्यक्ति को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। शिक्षा मानव के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. रवीन्द्र टैगोर के शैक्षिक विचारों का सामान्य परिचय प्राप्त करना।
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी विचार उनके द्वारा रचित पुस्तकों एवं शिक्षा से सम्बन्धित अन्य पुस्तकों में यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं, उन विचारों को एकत्र करके शिक्षा के सूत्र में बाँधना एवं समीक्षा करना।
3. शिक्षा के आधारों को खोजना जो इन्हें विश्व के महान शिक्षाशास्त्री की श्रेणी में खड़ा करते हैं।
4. रवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक उद्देश्यों पाठयक्रम, शिक्षण विधियों, गुरू–शिष्य सम्बन्ध, विधालय व्यवस्था एवं अनुशासन आदि का अध्ययन करना।
5. वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के विचारों के ग्रहणीय तत्वों को प्रस्तुत करना।

अनुसंधान विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक अध्ययन विधि का मुख्य उद्देश्य रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का अध्ययन व विश्लेषण इस अध्ययन को उपयुक्त दिशा प्रदान करना है।

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों तरह के स्त्रोतों को शामिल किया गया है।

1. प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की स्वयं के द्वारा रचित पुस्तकें।
2. द्वितीयक स्त्रोत में अन्य लेखकों द्वारा रचित पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि।

समस्या का सीमांकन :

प्रत्येक अध्ययन की एक सीमा होती है क्योंकि दुनिया बहुत बड़ी और ज्ञान अनंत। तथा अनुसंधानकर्ता की कार्य क्षमता सीमित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक विधि अध्ययन का आधार रही है। जिन बिंदुओ पर अपनी सीमाओं पर जितनी सामग्री मिल सकती थी, उसको सकारात्मक करने का पूरा प्रयास किया गया है।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबंध रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के अर्थ, उद्देश्य, पाठयक्रम, शिक्षण विधियों, अनुशासन शिक्षक, शिक्षार्थी सम्बन्ध, विद्यालय की संकलपना एवं नैतिकता सम्बन्धी विचारों तक सीमित है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की शैक्षिक अवधारणा :

शिक्षा के क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर के अपने अनुभव थे। इन्हें बचपन में अपनी घरेलू शिक्षा के बंधन और अपने समय की स्कूली शिक्षा की बुराइयों को सहन करना पड़ा। आगे चलकर ये अनुभव ही इनके शिक्षा दर्शन के आधार बने।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने पर बल दिया। इस बात पर भी बल दिया कि शिक्षा द्वारा जन साधारण की भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार :

शिक्षा वह समाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है और आध्यात्मिक पूर्णतः की प्राप्ति करता है। भौतिक दृष्टि से रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है – ''वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने और उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है।'' पर साथ ही गुरूदेव सृष्टि के कण–कण में ईश्वर को व्याप्त मानते थे। कि मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य इस आध्यात्मिक एकात्म भाव की अनुभूति करना है। इनके अपने शब्दों में ''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमारे जीवन और समस्त सृष्टि के बीच समरसता स्थापित करती है।''

रवीन्द्रनाथ टैगोर पहले भारतीय चिंतक हैं, जिन्होंने शिक्षा को सामाजिक और बहुउद्देशीय प्रक्रिया के रूप में स्वीकृत किया तथा शिक्षा के स्वरूप एवं कार्य दोनों को स्पष्ट किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानना था कि प्रकृति, मानव तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो में परस्पर मेल एवं प्रेम होना चाहिए। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता :

रवीन्द्रनाथ टैगोर उन महान व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने एक नवीन चिंतन की स्थापना की जिसे मानवता के रूप में जाना जाता है। जिसका वास्तविक लक्ष्य व्यक्ति का आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास है। कोई भी चिंतक जो राष्ट्र निर्माण का ध्वज लेकर निकला हो बिना शैक्षिक चिंतन के अपने विचारों को मूर्त रूप नहीं दे सकता। शोधार्थी को उनके शैक्षिक विचारों के अध्ययन के उपरांत जिन क्षेत्रों के विचार उपलब्ध हुए हैं, वे आज भी भारत के नवनिर्माण के लिए प्रासंगिक हैं।

शिक्षा का सम्प्रत्यय :

रवीन्द्रनाथ पहले भारतीय चिंतक है जिन्होंने शिक्षा को सामाजिक एवं बहुउद्देशीय प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया और शिक्षा के स्वरूप और उसके कार्य क्षेत्र दोनों को स्पष्ट किया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार –

''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमारे जीवन और समस्त सृष्टि के बीच समरसता स्थापित करती है।''

शिक्षा के उद्देश्य :

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का उद्देश्य शरीरिक विकास, बौद्धिक विकास, वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास, नैतिक विकास, व्यावसायिक विकास, और आध्यात्मिक विकास से है।

पाठ्यचर्या :

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने विस्तृत पाठ्यचर्या का निर्माण किया है। उन्होंने अपनी पाठ्यचर्या में भाषा, साहित्य, कृषि, शिल्प, खेलकूद, नृत्य प्रकृति अध्ययन, संगीत आदि सभी विषयों को शामिल किया है।

शिक्षण विधियाँ :

शिक्षण के संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बच्चों को वास्तविक परिस्थितियों में रखकर इन्द्रियानुभव द्वारा सीखने के अवसर प्रदान करने, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण करके शिक्षण विधि को रूचिकर बनाने, सीखने में बच्चों को स्वतंत्रता देने और उनके साथ प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने पर बल दिया है।

शिक्षा का माध्यम :

रवीन्द्रनाथ टैगोर शिक्षा की व्यवस्था राष्ट्रभाषा या मातृभाषा से ही किये जाने के पक्षधर थे।

अनुशासन :

रवीन्द्रनाथ टैगोर अनुशासन की आवश्यकता पर बल देते थे और उसकी प्राप्ति के लिए उच्च सामाजिक पर्यावरण और शिक्षकों के आदर्श आचरण को आवश्यक मानते थे। यह छात्रों को किसी भी स्थिति में दण्ड देने का विरोध करते थे।

शिक्षक :

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के शिक्षक के विषय में विचार एक ओर परम्परावादी थे और दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक। इनकी दृष्टि से शिक्षकों को ज्ञानी, संयमी और शिक्षार्थियों के प्रति समर्पित होना चाहिए।

शिक्षार्थी :

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के शिक्षार्थियों के विषय में विचार परम्परावादी के साथ–साथ आधुनिक थे। ये शिक्षार्थियो से ब्रह्मचर्य के पालन की अपेक्षा करते थे और उनके व्यक्तित्व का आदर करते थे। उनकी वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर उनकी शिक्षा की व्यवस्था करने पर बल देते थे।

विद्यालय :

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार विद्यालय प्राचीन गुरू आश्रमों की तरह जन कोलाहल से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थित होने चाहिए।

ये चाहते थे कि विद्यालय राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधि होने चाहिए। और इनमें राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही ये भी चाहते थे कि उनमें अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषा एवं संस्कृतियों की शिक्षा की व्यवस्था हो जिससे शिक्षार्थी विश्वबोध कर सके।

शिक्षा के अन्य पक्ष :

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने जन शिक्षा के महत्व को स्पष्ट किया तथा व्यापक रूप से लिया। रवीन्द्रनाथ टैगोर स्त्री शिक्षा के समर्थक थे तथा धर्म शिक्षा के बारे में इनका दृष्टिकोण आज के परिप्रेक्ष्य में एक दम ग्रहण करने योग्य है। इन्होंने कहा कि धर्म वह है जो जनकल्याण के लिए धारण किया जाता है, जिससे मनुष्य, समाज, राष्ट्र और समूचा संसार भौतिक एवं आध्यात्मिक श्री को प्राप्त करता है। इसी के साथ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने व्यावसायिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का सबसे बड़ा कार्य प्राचीन भारतीय आदर्श :

''वसुधैव कुटुम्बकम'' को अर्वाचीन आदर्श ''अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव'' के रूप में प्रस्तुत करना है। इन्होंने अपने द्वारा स्थापित 'विश्व भारती' में देश–विदेश की विशेष भाषाओं, साहित्यों और कला, संगीत व नृत्य की विधाओं के अध्ययन की व्यवस्था की।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों और प्रयोग का प्रभाव आज भारतीय शिक्षा में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आज पूरे भारत वर्ष में शिक्षा का माध्यम मातृ भाषाएं है और प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषाओं, कला–कौशलों और ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था है। आज जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, मानव धर्म शिक्षा और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा की जो व्यवस्था है इसके लिए बिगुल सर्वप्रथम रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ही बजाया था। सचमुच ये आधुनिक भारतीय शिक्षा के निर्माता थे।

शोध सारांश :

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने भारतीय शिक्षा में सुधार के लिए जो प्रमुख सुझाव दिये और जो कार्य किये उसके लिए वे सदैव स्मरण किये जायेंगे। इन्होंने शिक्षा के स्वरूप और उसके कार्यो की स्पष्ट व्याख्या की है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास पर समान रूप से बल दिया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का प्रभाव आज भारतीय शिक्षा पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आज पूरे भारतवर्ष में शिक्षा का माध्यम मातृभाषाएं हैं और प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषाओं, कला–कौशलों और ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा की

व्यवस्था है। आज जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, मानव धर्म शिक्षा और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा की जो व्यवस्था है इसके लिए बिगुल सर्वप्रथम रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ही बजाया था। सचमुच यह आधुनिक भारतीय शिक्षा के निर्माता थे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- तरूण हरिवंश (2001), विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली–110002
- द्विवेदी कनक (2014), प्रमुख शिक्षाविदों के शैक्षिक विचार, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली–110002
- गुप्ता पी0एस0 (2014), माध्यमिक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
- सिंह मधुरिमा, शिक्षा के सिद्धांत, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
- पलोड़ एवं लाल, शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग (उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक)
- शास्त्री के0एन0, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, गोविंदलेन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
- पाठक आर0पी0 (2012), शिक्षा के दाशनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, प्रकाशक, डार्लिंग किंडरस्ले इंडिया प्रा0 लि0, नई दिल्ली–110017
- यादव नीतू, शिक्षा के सामाजिक दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली–110002